निमन्त्रण-पत्र

अखिल भारतीय पर्यावरण एवं कृषि सम्मेलन

15 दिसम्बर से 18 दिसम्बर, 2013 को लहरागागा, जिला संगरूर (पंजाब) में

पर्यावरण और कृषि सम्मेलन का कार्यक्रम (एजेण्डा)

(1) पर्यावरणीय गिरावट और मानव समाज के अमानवीयकरण का कारण और इसका विकल्प प्रकृति-मानव समर्थक वैश्विक समाज का गठन।

(2) रासायनिक या जी.एम. तकनीक आधारित खेती का वास्तविक विकल्प पर्यावरण और मानव हितैषी सहकारी-प्राकृतिक (या जैविक) खेती में निहित।

पर्यावरण और खेतीबाड़ी दो जुड़वां पहलू हैं। आज ये दोनों घटक संकटग्रस्त हैं। इन दोनों घटकों की शुद्धता के बगैर हमारी धरती पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आज हमारे ग्रह (पृथ्वी) पर पर्यावरण के सभी घटक – हवा, पानी, जमीन, जंगल और जैव विविधता – बर्बादी के कगार पर है। बाजार आधारित रासायनिक खेती ने हमारी भोजन शृंखला को भी जहरीला बना दिया है। जमीन के उपजाऊपन को नष्ट कर दिया है, पानी को प्रदूषित किया है तथा जैव विविधता को भारी नुकसान पहुँचाया है। मानवीय स्वास्थ्य को भारी हानि पहुँचाई है। बहुत सी घातक बीमारियों/महामारियों को जन्म दिया है। अब दूसरी हरित क्रांति के नाम से जैनेटिक मोडीफाइड (जी.एम.) बीजों का प्रचलन खुले व छिपे तौर पर भारत जैसे पिछड़े देशों की सरकारें बाजार दर्शन के माध्यम से ला रही है। जबकि दुनिया के बहुत बड़ी संख्या में वैज्ञानिक इस तथाकथित 'हरित क्रांति' के प्रति संशय ही नहीं रखते बल्कि इसके जैव-जीवन विरोधी चरित्र को उजागर करते हुए इसे प्रकृति विरोधी और मानव विरोधी करार देते हैं। दूसरी तरफ दिल्ली सरकार के कृषि मंत्री बयान देते हैं कि हम काफी समय से जी एम तेलों का आयात करके देश की जनता को खिला रहे हैं अत: अब समय आ गया है कि हम खुद भी जी.एम. क्रांति में शामिल हो जाएँ और अपनी कृषि को जी.एम. आधारित कर लें। कोई आश्चर्य नहीं है कि देश की जनता को पता ही नहीं चला कि हम कब से विदेशों से आयातित जी.एम. सीड का तेल खा रहे हैं।

बाजार आधारित रासायनिक खेती ने आम तौर पर पूरी दुनिया और हमारे देश तथा खास तौर पर पंजाब के किसानों को घाटे में धकेल दिया है जबकि केवल रासायनिक उद्योगों के मालिकों को मुनाफा बटोरने में सहायता दी है।

शुद्ध पर्यावरण और शुद्ध भोजन हमारी जीवन रेखा है, इन्हें बाजार आधारित मुनाफे के सुपुर्द नहीं किया जा सकता। ऐसा करना मानव जीवन सहित समस्त जैव-जीवन के लिए आत्मघाती है। यही आज बाजार निर्देशित कॉर्पोरेट दुनिया कर रही है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था आई.पी.सी.सी. के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग (धरती का गर्म होना) अपने चरम बिन्दु की तरफ बढ़ रही है जिसके बाद धरती पर जीवन को बचाना असंभव हो जाएगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक गर्मी पैदा करने वाली कार्बन डाई आक्साइड गैस की मात्रा 400 पी.पी.एम. तक बढ़ चुकी है जबकि 450 पी.पी.एम. चरम सीमा है। अत: अगर तथाकथित 'विकास' की यही रफ्तार रही तो एक दशक से चार दशक के बीच यह सीमा कभी भी पार हो जाएगी। अत: यह विकास नहीं सर्व विनाश है।

हमारी धरती पर 10000 नदियों में से 8000 नदियाँ प्रदूषित हो चुकी हैं और उनका पानी जीवों के पीने लायक नहीं रह गया है। सिंचित भूमि का जैविक मादा (उर्वरकता) रासायनिक खेती ने 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक नष्ट कर दिया है। हमारी धरती पर जंगल 15 प्रतिशत से कम रह गया है। हमारी बहुत-सी प्रजातियाँ या तो विलुप्त हो गई हैं या उनकी संख्या में भारी कमी आ गई है। हमारी पृथ्वी के आन्तरिक संरचना में भारी दोहन के माध्यम से जो गड़बड़ी की है जिसे हम भूकम्पों की बढ़ती आवर्ती के रूप में झेल रहे हैं।

वर्तमान 'जीवन या मौत' की गम्भीर चुनौती का कारण बाजार आधारित विश्व कारपोरेट व्यवस्था में निहित है। यह व्यवस्था निजी हित या व्यक्तिगत स्वार्थ की दिशा देकर सामाजिक हित को गौण बनाती है तथा पर्यावरणीय सुरक्षा (सभी जीवों और समस्त मानव जाति की सुरक्षा) को पूरी तरह अनदेखा करके हमारे ग्रह (पृथ्वी) को 'टाइटैनिक जहाज' बना चुकी है। यह आज एक आत्मघाती समाज व्यवस्था में तब्दील हो चुकी है।

इसका समाधान दुनिया की समस्त मानव जाति द्वारा प्रकृति-मानव केन्द्रित एजेण्डा अपना कर, आम जनता की भागीदारी और सशक्तिकरण के माध्यम से एक ऐसे वैश्विक समाज का गठन करना है, जिससे प्राकृतिक (या जैविक) सहकारी खेती को जीवन का आधार बनाया जाए। इस महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी अकेले किसानों पर नहीं डाली जा सकती, किसानों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करके सम्पूर्ण मानव समाज यह कार्य सम्पन्न कर सकता है। प्राकृतिक खेती कोई नई प्रक्रिया नहीं है। हमारे पुरखे सैकड़ों वर्षों से इसे करते आ रहे हैं।

इस अति गम्भीर मुद्दे पर किए जा रहे 4 दिवसीय सम्मेलन में आप की भागीदारी हमारे लिए अत्यन्त जरूरी है। हम आपकी प्रतीक्षा करेंगे।

कार्यक्रम :

खुला सत्र : 15 दिसम्बर, दोपहर 12.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक

प्रतिनिधि सत्र : 16 दिसम्बर प्रात: 9.00 बजे से 18 दिसम्बर, दोपहर 2.00 बजे तक

सम्मेलन का स्थान :

जी.पी.एफ.

लहरागागा, जिला संगरूर (पंजाब)

सम्पर्क सूत्र :

सुखदेवसिंह 09915342232, 01652-274551, तरसेमचंद 09417557395, अरुण कराण्डे 09820235030, फूसराज छलानी 07597415431, मन्नाराम डांगी 09414927387, शत्रुघन डांगी 09430607530, सज्जनकुमार 09001826467, घनश्याम डेमोक्रेट 09414864548, रूपचंद मखनोत्रा 09419116969

आयोजक :

खेतीबाड़ी और किसान विकास फ्रंट (पंजाब)

प्रकृति-मानव हितैषी कृषि अभियान भारत

प्रकृति-मानव केन्द्रित जन आन्दोलन (भारत)

e-mail: ghan_demo@yahoo.co.in / sajjan_nhcpm@rediffmail.com
rcmakhnotra@yahoo.co.in / sukhdev.nhcpm@gmail.com
log on : www.nhcpm.org

नोट :

1. लहरागागा वाया जाखल से भी पहुँचा जा सकता है।
2. प्रतिनिधियों को रिसीव करने के लिए जाखल एवं लहरागागा रेलवे स्टेशनों पर व्यवस्था होगी।
3. जाखल से लहरागागा 12 किमी दूर है। वहां से लहरागागा के लिए जीप, टेम्पो, टैक्सी उपलब्ध हैं।
4. मुम्बई एवं कोलकाता साईड से आने वाले नई दिल्ली से जाखल रेल द्वारा आ सकते हैं।
5. दक्षिण भारत से आने वाले प्रतिनिधि चैन्नई-जम्मू तवी (मंगल, शुक्र, शनि) तथा कन्याकुमारी-जम्मू तवी (सोम) रेल द्वारा सीधे लहरागागा आ सकते हैं।
6. सम्मेलन का स्थान लहरागागा के रेलवे स्टेशन और बस अड्डा के पास ही है।
7. खाने एवं ठहरने की व्यवस्था आयोजक कमेटी की तरफ से होगी।

Train Map of Lehragaga Punjab

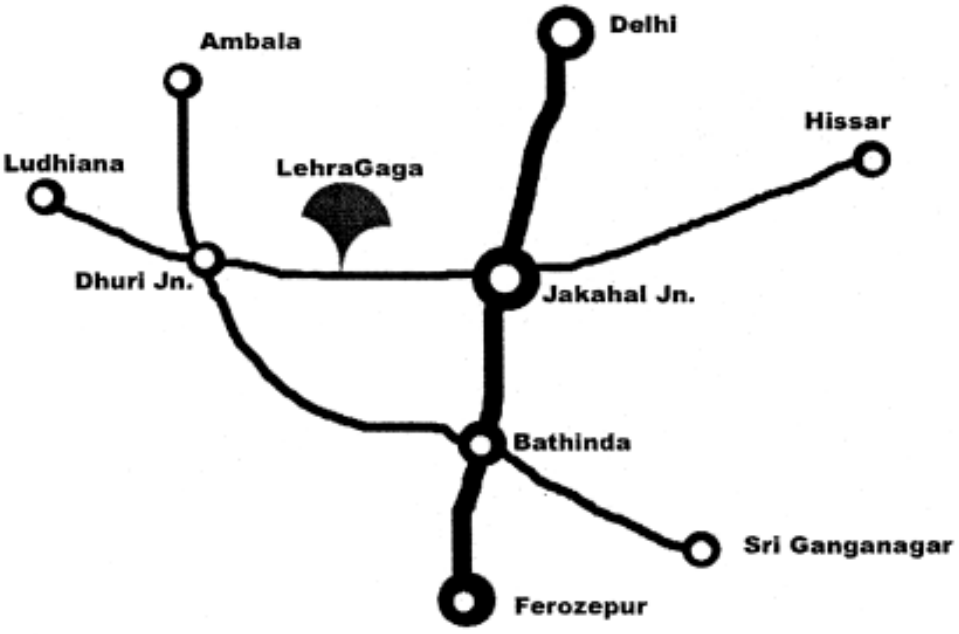

Train Schedule:

Train No.	From	To	Days	Arrival
16031	Chennai	Jammu Tavi	Tue, Fri, Sat.	Lehragaga 4.24
16317	Kanya Kumari	Jammu Tavi	Mon.	Lehragaga 4.24
14035	Delhi Jn.	Pathankot	Sat.	Jakhal Junction 2.10
14036	Pathankot	Delhi Jn.	Sun.	Sunam 2.38
12037	New Delhi	Ludhiana	Sat., Sun.	Lehragaga 10.56
16032	Jammu Tavi	Chennai	Sat., Sun.	Lehragaga 8.01

Passenger Train (Local Trains)

54601	Hissar	Amritsar	Daily	Lehragaga 1.10
54602	Amritsar	Hissar	Daily	Lehragaga 0.09
54053	Jakhal	Ludhiana	Daily	Lehragaga 5.38
54054	Ludhiana	Jakhal Jn.	Daily	Lehragaga 21.54
54603	Hissar	Ludhiana	Daily	Lehragaga 6.41
54604	Ludhiana	Hissar	Daily	Lehragaga 17.18
54605	Hissar	Ludhiana	Daily	Lehragaga 9.35
54606	Ludhiana	Hissar	Daily	Lehragaga 20.24
54632	Dhuri	Hissar	Daily	Lehragaga 6.16
54633	Hissar	Ludhiana	Daily	Lehragaga 15.49
54634	Ludhiana	Hissar	Daily	Lehragaga 8.39
54635	Hissar	Ludhiana	Daily	Lehragaga 18.43
54636	Ludhiana	Hissar	Daily	Lehragaga 12.22
64631	Hissar	Dhuri	Daily	Lehragaga 20.18